राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 217
अग्रज
नागराज

संजय गुप्ता पेश करते हैं
अग्रज
कमीनो! भाड़े के टट्टुओ!
कथाः जॉली सिन्हा

राज कॉमिक्स
नागराज
कश्मीर को अपना बताकर उसको उजाड़ने वाले कीड़ों...
चित्रः अनुपम सिन्हा
नागू तुम्हारा नामोनिशान मिटाकर रख देगा! तुमने भारत माता के मस्तक का अपमान किया है!...
इंकिंगः विनोदकुमार, नरेशकुमार
सुलेख एवं रंग संयोजनः सुनील पाण्डेय
...इसीलिए तुम्हारा मस्तक तुम्हारे सिरों पर नहीं रहेगा!

भारत माता की जय!
वड़ाऽऽऽमऽऽऽ
नहींऽऽऽऽऽ
मिशन कश्मीर पूरा हुआ!
सम्पादकः मनीष गुप्ता

अरे बाप रे! भागो! कहीं नागराज ने हमको अपने शरीर में घुसने न दिया तो मैं घर से बेघर हो जाऊंगा!

लेकिन मणि का क्या करोगे? उसको अपने कबीले में वापस देने नहीं जाओगे क्या?

अब वहां गया तो फिर वहीं रहना पड़ेगा! क्योंकि फिर मुझे नागराज तो अपने पास रखेगा नहीं!

मणि को फिलहाल किसी गुप्त स्थान पर छिपा दूंगा!

नागू और मणि के विषय में जानने के लिए पढ़ें: सम्मोहन

इसी वक्त- महानगर में स्थित एक पुरानी उजाड़ फैक्ट्री में-

क्या कर रहा है? अभी तक एक बम नहीं बना पाया?

ब... बस दस मिनट और चिंग चैंग!

जल्दी कर! मैं इस बम को फोड़ने का इंतजार नहीं कर सकता! बाकी सारी तैयारी हो चुकी है! बम फटेगा महानगर में और शक जाएगा असम और उत्तर पूर्वी राज्यों के आतंकवादी संगठनों पर!

आतंकवादियों को पकड़ने के लिए पुलिस निर्दोषों को भी पकड़ेगी! जनता में असंतोष बढ़ेगा और आतंकवादी भी बढ़ेंगे! उनको मदद देंगे हम चीन वाले! और फिर एक दिन पूरे उत्तर पूर्वी भारत पर कब्जा कर लेंगे!

मैं अंधेरे में अकेले गश्त लगा रहा हूं और चिंग चैंग नागराज का नाम बार-बार लेकर मुझे डरा रहा है!

ये जानता नहीं है नागराज के बारे में!

वह कहीं भी आ सकता है! कभी भी आ सकता है!

स... सांप! सांप! यानी...
... नाग... प्प!
ये तो तांग की आवाज थी!
तांग! तांग! क्या हुआ?
कहां है तू?
आवाज उधर से आई है!
तांग! तांग!
तांग!
तांग!

कोई आवाज नहीं आ रही है। यानी दोनों आवाज लगाने के काबिल नहीं रहे हैं! ... और... और बम भी गायब हो गया है! यानी...
... यानी नागराज यहां पर आ चुका है!
धड़ड़ड़म
हां! मैं आ चुका हूं!
मैंने बताया था! जैसे मैंने चिंगचैंग को हिन्दुस्तान पर कब्जा करने का प्लान बताया था! और महानगर में धमाके से प्लान की शुरुआत करने को कहा था! अब मेरी योजना की सफलता सिर्फ एक बात पर निर्भर करती है! ...
वाह! लेकिन तू यहां पर आया कैसे नागराज?
किसी ने मुझे खबर भेजी थी कि इस पुरानी फैक्ट्री में बम बन रहा है। तुम्हारे बारे में भी बताया था!
... कि नागराज चिंगचैंग को खत्म कर दे!

मैं तुमको चोट पहुँचाना नहीं चाहता चिंगचैंग! पचास देशों की पुलिस तुमको ढूंढ रही है! अब ये फैसला तुमको करना है कि तुम जेल जाना चाहोगे या अस्पताल!
जेल या अस्पताल! हाहाहा! पहले तू ये फैसला कर ले नागराज कि तू यहां से अपने पैरों पर भागकर जाएगा या चार कंधों पर श्मशान की तरफ जाएगा!
पहला वार नागराज ने ही किया-
आम इंसानों पर मैं नाग शक्ति के वार नहीं करता चेंग!
क्योंकि उनके लिए मेरी शारीरिक शक्ति ही काफी है!
मुझे आम इंसान समझने की भूल मत कर नागराज!
वार करारा था-
लेकिन जवाब उससे भी ज्यादा करारा था-
आऽऽऽह! बला की ताकत है इस चीनी में!
धड़ाक्कक

मैं जिसको मारता हूं, उसकी आत्मा मेरी गुलाम हो जाती है नागराज! फिर वह आत्मा मेरे शरीर में ही रहती है! इस वक्त मेरे शरीर में मेरी आत्मा को मिलाकर पूरी एक हजार आत्माएं हैं!
इसीलिए मुझमें हजार आत्माओं की शक्ति है!
इसीलिए तो मुझे तेरी मौत चाहिए चेंग!
बड़ी मेहनत के बाद ढूंढा है मैंने तेरे जैसा दुष्ट शरीर!
तेरी आत्मा मेरे शरीर में आकर बसने वाली हजारवीं आत्मा होगी नागराज!
सपने मत देख चिंगचेंग...
...आज तेरे शरीर में बसने वाली सारी आत्माएं आजाद हो जाएंगी!
मैं उनको आज़ाद कर दूंगा!

ओह! इस वार से एक सामान्य इंसान की रीढ़ टुकड़े-टुकड़े हो जाती! लेकिन तुझ पर कोई असर नहीं हुआ! तू सचमुच सामान्य इंसान नहीं है! तुझ पर नागशक्तियों का प्रयोग करना होगा!
हा हा! नागशक्तियां! तू कलाइयों से जहरीले नाग छोड़ता है! मजा आ गया!
कच
फूऽऽऽऽ
चीन छोड़ने के बाद पहली बार सांप खाने को मिल रहे हैं! बड़े स्वादिष्ट हैं तेरे सांप!
फूऽऽऽऽऽऽ
तो अब विष फुंकार के साथ इनको निगल जा!
कचर
कचर
कचर

विषफुंकार ने चैंग को उसके पैरों पर खड़े नहीं रहने दिया-
आऽऽऽह! जहरीला इंसान है तू! तेरे शरीर में नाग और जहर भरा हुआ है। अब मुझे भी चीनी तंत्र को काम में लाना पड़ेगा!
देख नागराज! कई सिद्धियां प्राप्त की हैं मैंने! तू अपने शरीर में सांपों को रखता है तो मैं अपने शरीर में ड्रैगन को रखता हूं!
ओह! आग उगलता ड्रेगन! मैंने किसी आतंकवादी में ऐसी शक्तियां होने की कल्पना भी नहीं की थी!

आऽऽऽह! इसका मुंह बांधना पड़ेगा। क्योंकि इसकी आग मुझे भस्म कर सकती है!
फटाक
सट्ठ
ओह! नागरस्सी से ज्यादा मजबूत बंधनों का प्रयोग करना पड़ेगा!
लेकिन-
ओह! इसने लोहे के मोटे पाइप तक को तोड़ डाला!
तड़ाक
ऐसा बंधन अभी तक बना ही नहीं जो इस ड्रेगन का मुंह बन्द कर सके!...
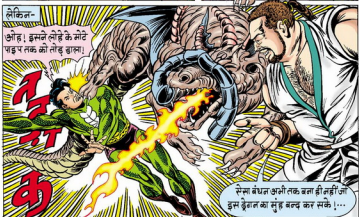
...तुझे तो यह भूल कर ही रहेगा!
इसकी मोटी खाल में दांत गड़ाना भी असंभव है! वर्ना मैं इसे काटकर गला देता! इसको मैं एक घूंसे से बेहोश कर सकता हूं! लेकिन ये वह एक घूंसा मारने का मौका तो दे!
नागराज को मदद की जरूरत है! लेकिन अभी वार किया तो यह भेद खुल जाएगा कि यहां पर चैंग और उसके आदमियों के अलावा कोई और भी है!
ओह! ये मुझे दुबारा अपने मुंह तक पहुंचने का मौका ही नहीं दे रहा है!
तड़ाक
थोड़ी देर और देखता हूं!
इसकी दुम! हां, इससे बात बन सकती है!
अगले ही पल-
नागराज ने ड्रेगन की दुम आग के सामने कर दी-
अपनी ही दुम झुलसने के कारण ड्रेगन तिलमिला उठा-

ड्रेगन थोड़ी देर के लिए असंतुलित हुआ-
और नागराज को वह मौका मिल गया, जिसकी उसे तलाश थी-
धड़ाक
ये ड्रेगन मेरे काम का नहीं रहा!
और अब तू भी किसी काम का नहीं रहेगा, नागराज!
कणों में बिखेर दूंगा मैं तुझे!
यह काम मैं खुद भी कर लेता हूं! तुझको तकलीफ करने की जरूरत नहीं है! तेरे चीनी तंत्र को मेरे विशेष नागफनी सर्प रोक लेंगे!
ओह! तुझमें चमत्कारी शक्तियां भी हैं नागराज!

Amaan
अग्रज
तेरी आत्मा पाकर तो मेरी तंत्र शक्तियां कई गुना बढ़ जाएंगी!
तुझे मरना होगा नागराज! मरना होगा! मर! मर!
नहीं मरता! जा! क्या कर लेगा?
धप्प
आऽऽऽह! शारीरिक शक्ति में तू मेरे ही समान है! तू मुझसे लड़ सकता है!
इसलिए अब तू उनसे लड़ेगा, जिनसे तू लड़ नहीं सकता! मेरी गुलाम आत्माओं से!
इनसे लड़कर जीत सकता है तो जीत ले नागराज!

नागराज कई आत्माओं के शिकंजे में फंस गया-
ओऽऽऽ ह! आत्माओं से तो सिर्फ मेरी आत्मा ही लड़ सकती है। मेरा शरीर नहीं। और अपनी आत्मा को मैं शरीर से बाहर निकाल नहीं सकता!
इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग शायद मुझे बचा सके?

कहानी 19 पेज से जारी

कोई फायदा नहीं है! इच्छाधारी शरीर भी इनके शिकंजे से छूट नहीं पा रहा है! ... ये मेरा दम घोंट रहे हैं। मेरे शरीर की हड्डियों को तोड़ना चाह रहे हैं!
ये कैसा वार कर दिया इस महा दुष्ट ने! अब मुझे नागराज की मदद करनी ही होगी! एक पल, एक पल! नागराज कुछ कर रहा है! उसको कोई रास्ता सूझ गया है!
नागराज ने चिंगचैंग की इस शक्ति को ही उसकी कमजोरी बना लिया था-
तुझमें आत्माओं की शक्ति है चिंगचैंग! इसलिए इतनी आत्माएं तेरे शरीर से निकल जाने के बाद तेरी शक्ति कम हो गई होगी! अब या तो तू आत्माओं को वापस बुलाएगा, या मुझसे पिटेगा! सोच ले कि तुझे क्या करना है!
इसकी नागशक्ति मुझ पर भारी पड़ रही है!
मेरी हालत तो सांप-छछून्दर वाली हो गई है। आत्माओं को वापस बुलाऊं, या न बुलाऊं, दोनों ही स्थितियों में मेरी पिटाई निश्चित है!

यह काम उतना आसान नहीं है, जितना चिंगचैंग समझ रहा है। मेरी हड्डियों पर पड़ता आत्माओं का दबाव मेरा काम मुश्किल बना रहा है। लेकिन अभी ये भ्रम में है...
...इससे पहले कि आत्माएं मेरी हड्डियां तोड़ दें, मुझे इस पर काबू पा लेना होगा!
चिंगचैंग के सामने एक ही रास्ता बचा था, आत्माओं को वापस बुलाने का-
लेकिन उसने आत्माओं को बुलाने में देर लगा दी थी-
नागराज के वारों ने उसको अधमरा कर दिया था-
वैसे तो तुझे जान से मार देना चाहिए चैंग! इसी में दुनिया की भलाई है!
लेकिन नागराज ने किसी इंसान की जान न लेने की शपथ ली हुई है।
ओह! यह मुझे पता नहीं था! अगर नागराज इसकी जान नहीं लेगा तो मेरी योजना का क्या होगा ? इसकी जान तू लेगा नागराज! तू लेगा!
अगले ही पल नागराज के सर्पों द्वारा उठाया गया बम और उसका रिमोट हवा में उठता चला गया-
और पीछे हटते चैंग के ठीक पीछे आ गिरा-

नागराज के वार से बेहोश होकर चिंगचैंग, बम के ऊपर आ गिरा-
और उसी पल नागराज के गिरते पैर के नीचे उस बम का रिमोट आ सरका-
बटन दबा-
और धमाके ने चिंगचैंग के साथ-साथ नागराज को भी हवा में उड़ा दिया-
बड़ाममम
आऽऽऽ ह!
यह रिमोट मेरे पैर के नीचे कैसे आ गया? और... और ये बम यहां पर कैसे आया? इसको तो मैंने दूसरी मशीन के पीछे छिपाया था!
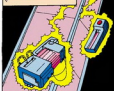
ओह! यह धमाका तो अप्रत्याशित था! मुझे इच्छाधारी कणों में बदलने तक का मौका नहीं मिला! पूरा शरीर घायल हो गया है। घाव भरने में थोड़ा वक्त लगेगा!
लेकिन बेचारे चिंगचैंग के चिथड़े... अरे!
चैंग का शरीर तो सही-सलामत है! ऐसा भयंकर धमाका भी इसके चिथड़े नहीं उड़ा पाया!
ऐसा अवश्य इसकी तंत्र शक्ति के कारण हुआ है! लेकिन... लेकिन यह क्या? चिंगचैंग का मृत शरीर अपने आप हवा में कैसे उठ रहा है?
ओह! ऊपर 'गर्डर' पर कोई खड़ा है। वह किरणों से चैंग के शरीर को उठा रहा है!
कौन है यह रहस्यमय शख्स? जरूर चैंग का कोई मददगार होगा!
मुझे इसको रोकना होगा। वर्ना यह चैंग को शायद फिर जीवित कर दे!

नागराज आगे बढ़ा तो जरूर-
लेकिन-
तू अगर घायल न होता नागराज तो शायद मुझे कुछ पलों के लिए रोक सकता था।...
... लेकिन इस शक्तिहीन अवस्था में तू मेरे लिए सिर्फ एक मच्छर है। तुझे नुकसान पहुंचाना मेरा मकसद नहीं है। मुझे तो सिर्फ चैंग की लाश चाहिए। और उसे मैं लेकर अवश्य जाऊंगा!
ये गायब हो रहा है। साथ ही चिंगचैंग का शरीर भी अदृश्य हो रहा है। और मैं इसको रोकने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता हूं!

मामला उतना सीधा नहीं है, जितना नजर आ रहा था! मैं तो इनको मामूली आतंकवादी समझ रहा था! लेकिन यह कोई और गहरा षड्यंत्र है!...
...चिंगचैंग मेरे बारे में नहीं जानता था लेकिन इस रहस्यमय बूढ़े को मेरी जानकारी थी! और वह शायद मेरे जीतने का इंतजार भी कर रहा था! पर क्यों? क्या करेगा वह चिंगचैंग के मृत शरीर का?
शायद इन दोनों से कुछ पता चल सके!
इस घटना का असर दूर तक होने वाला था-
आज घर में बड़ा सन्नाटा है! दादाजी कहां हैं?
दादाजी!
ये आवाज कैसी है? किचन से आई है! कुछ गड़बड़ है! घर में कोई है!
ठन
लेकिन इस घर में मामूली चोर तो घुस नहीं सकता! जरूर कोई सुपर पॉवर वाला विलेन होगा!
और...और शायद उसने दादाजी को कुछ नुकसान भी पहुंचाया है!
जो भी है, वह किचन में ही है! मुझे सावधानी से आगे बढ़ना होगा!
और एक ही वार में उसकी खोपड़ी...
नहींssss
तुम?

क्यों? क्या किया है तुम दोनों ने? हां?

नागराज से चार घंटे की छुट्टी लेकर गए थे, फिल्म देखने! मणि लेने जाने का बहाना बना-कर! फिर देर हो गई और होती चली गई। अब तो कई घंटे हो चुके हैं!

हां, दीदी! नागराज तो हमारी इस हरकत पर बहुत गुस्सा होगा! कहीं हमको अपने शरीर से ही न निकाल दे!

हमारी मदद कीजिए न दीदी!

दादाजी किसी चिन्ता में हैं! वे कल भी सारा दिन अपने कमरे में ही थे! न जाने किसकी जन्मकुंडली का हिसाब-किताब कर रहे थे! मुझे उनसे पूछना होगा कि आखिर वे किस चिन्ता में हैं!

दादाजी!
भारती, तुम! तुम कब आईं?
आपको तो आजकल होश ही नहीं रहता है दादाजी कि मैं कब जाती हूं, और कब आती हूं!
अरे! अरे! आपकी आंखों में आंसू!
क्या बात है दादाजी?
मुझसे आप क्या छुपा रहे हैं?
समय कितनी जल्दी गुजर जाता है इसका पता ही नहीं चलता है भारती! मालूम ही नहीं पड़ता कि कब बिछुड़ने का वक्त आ जाता है!
किससे बिछुड़ने का वक्त दादाजी?
ये किसकी जन्मकुंडलियां हैं?
ओ माई गॉड! ये तो मेरी कुंडली है! और ये दूसरी कुंडली भी मेरी है! सिर्फ इस पर नाम नहीं लिखा है! और एक जन्मकुंडली दादाजी की भी है! कौन बिछुड़ने वाला है? मैं या दादाजी!
'बिछुड़ने' से दादाजी का अभिप्राय कहीं 'मृत्यु' से तो नहीं है? ओह! यह कैसा रहस्य है जो दादाजी मुझसे बताना नहीं चाहते!

अग्रज
रहस्य और गहरा होने वाला था-
तंत्रता तेरे मृत शरीर को अपनी साधना का माध्यम बनाएगा चिंगचैंग! क्योंकि तेरा पापी शरीर ही मेरी अति दुष्ट तरंगों को उस स्थान तक पहुंचा सकता है, जहां पर अनंतकाल से सोया हुआ है तालिस्मान!

तरंगें जमीन का सीना चीरती चली गई-
और कुछ ही देर के बाद वे तरंगें वापस लौटकर चिंगचैंग के मृत शरीर में समाने लगीं-
और इस बार चिंगचैंग का शरीर चिथड़े-चिथड़े होने से बच नहीं सका-
बोल तंत्रता!
क्यों जगाया है तूने तालिस्मान को उसकी निद्रा से!
जिन्दगी पाने के लिए तालिस्मान! मेरा काम सिर्फ तू ही कर सकता है!
सिर्फ तू!

तूने मुझे एक महापापी शरीर की भेंट दी है! बदला तो चुकाना ही पड़ेगा! बता, क्या काम है तेरा?
तंत्रता तालिस्मान को अपना काम बताता चला गया-
नागराज अभी तक रहस्यों के भंवर में ही फंसा था-
मैंने इन दोनों को सम्मोहित करके इनसे सच जान लिया है!
इनको चिंगचैंग या उस रहस्यमय बूढ़े के बारे में कुछ भी नहीं पता है! ये दोनों बम बनाने में एक्सपर्ट हैं और इसीलिए चिंगचैंग इनको किराए पर महानगर लाया था! बूढ़े के बारे में ये कुछ भी नहीं जानते हैं!
मुझे इंतजार करना होगा! जल्दी ही कुछ न कुछ जरूर घटेगा! तब तक दादा वेदाचार्य से मिलकर पता करता हूं कि वे उस बूढ़े के बारे में कुछ जानते हैं या नहीं!
वेदाचार्य का ध्यान कहीं और था-
दादाजी! कुछ साधना कर रहे हैं, और दीवार में द्वार प्रकट हो रहा है!

इस द्वार के बारे में तो मुझे भी पता नहीं था! दादाजी ने इसके अन्दर जाकर जरूर कोई बहुत गुप्त और कीमती चीज रखी है!
ओऽऽऽ इतने बड़े द्वार के अंदर एक छोटी सी माला!
छिपकर देखती हूं कि दादाजी इस माला से क्या करने जा रहे हैं!
महानगर के आकाश पर नागराज के अलावा कोई और भी उड़ रहा था-
सूंऽऽऽऽ इधर ही है! यही दिशा है...
और यही स्थान है!
यहीं है वह बूढ़ा वेदाचार्य, जिसके पास है तिलिस्मघाती!
उस प्राणी के अंदर घुसने की कोशिश करते ही खतरे के संकेत उस घर को गुंजाने लगे-
पी पीं पीं पा
कोई अंदर घुसने की चेष्टा कर रहा है! कौन है ये?
कोई अजीब सा प्राणी है दादाजी!
लेकिन आपका तिलिस्म उसे रोक रहा है!

मुझे खतरे का आभास हो रहा है, भारती! अंदर घुसने वाला जो भी है वह शक्तिशाली भी है, और खतरनाक भी!
ओऽऽऽ ह! शायद आप ठीक कह रहे हैं दादाजी! उसने बाऊंड्री वाल पर लगी तिलिस्मी बाड़ को काट डाला है!
मेरा आभास सही था भारती! मुझे स्वयं बाहर जाकर उसको रोकना होगा! वर्ना वह इस तिलिस्मी घर को भारी क्षति पहुंचा देगा!
इस घर का तिलिस्म मुझे रोक रहा है! लेकिन यह घटिया तिलिस्म सूचक को रोक नहीं पाएगा!
तुझे मैं रोकूंगा सूचक! वेदाचार्य रोकेगा तुझे!
कड़ड़हूऽऽऽम
ओह! मुझे तो तेरी ही तलाश में भेजा गया था! और तू खुद ब खुद मेरे सामने आ गया! इतना आसान काम तो तालिस्मान ने मुझे पहले कभी नहीं दिया!
तालिस्मान!
तिलिस्मराज तालिस्मान!
तुझे तालिस्मान ने भेजा है! यानी वह फिर जाग उठा है! क्या चाहता है तालिस्मान मुझसे?

तिलिस्मघाती! तुमसे तेरा तिलिस्मघाती चाहता है तालिस्मान!
तिलिस्मघाती! तिलिस्मघाती तो वह यंत्र है जो किसी खास तिलिस्म की चाबी होता है! हर तिलिस्म रचने वाला उस तिलिस्म की एक काट यानी तिलिस्मघाती बनाकर जरूर रखता है, ताकि जरूरत पड़ने पर वह खुद आराम से तिलिस्म में घुस सके!
ओह! यानी तिलिस्मराज तालिस्मान में भी मेरा तिलिस्म तोड़ सकने की क्षमता नहीं है! फिर तू मेरा तिलिस्म क्या खाकर तोड़ेगा?
इस वक्त दुनिया में मेरा सिर्फ एक तिलिस्म मौजूद है, जिसमें रखी वस्तु तालिस्मान को चाहिए पर क्यों?
सोच मत बुड्ढे! तिलिस्मघाती दे दे, और अपनी जिन्दगी को कुछ सालों के लिए बढ़ा ले! ...दे!
मत भूल वेदाचार्य कि वह तिलिस्म तूने अपने पुराने दिनों में बनाया था! अब तेरे पास वैसी तिलिस्म बना सकने लायक शक्ति नहीं है, तेरे ये घटिया तिलिस्म मुझे रोक नहीं पाएंगे!
तू बूढ़ा हो गया है वेदाचार्य! अब तो तू तालिस्मान के तो क्या, सूचक के तिलिस्म वार तक झेल नहीं सकता!
बूढ़ों के चरण छूकर आशीर्वाद लिए जाते हैं सूचक! उन पर वार नहीं किया जाता! वार करने का शौक तू मुझ पर पूरा करले!
फेसलेस पर!
फेसलेस! सुना तो था कि वेदाचार्य का एक सेवक भी है!

और यह भी सुना था कि उसकी ताकत उसकी पोशाक है, जिस पर तंत्र वार असर नहीं करते!
अब देख भी लिया न!
देखा! लेकिन तू यह भूल गया है कि मैं तांत्रिक के साथ तिलिस्मी वार भी करता हूं!
ओह! ये गोले मुझे चारों तरफ से घेर रहे हैं! इनके अंदर से गर्म गैस की लहरें निकलकर मुझे लपेट रही हैं!
और गर्म हवा के साथ-साथ मेरा शरीर भी ऊपर उठ रहा है!
फेसलेस को कोई भी जवाबी वार करने का मौका नहीं मिला-
और गर्म वायु एकाएक ठंडी होनी शुरू हो गई-
नतीजा सामने था-
फेसलेस अपने होशोहवास कायम नहीं रख पाया-

घर के अन्दर-
अभी कोई आवाज आई थी। खतरे के अलार्म जैसी!
एकाएक बड़ी शांति हो गई है नागबाला! दादाजी तो पहले ही चुप थे! अब दीदी भी चुप हो गई हैं!
कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं है! चलकर देखना चाहिए!
हां, चलो!
मुसीबत बाहर थी-
ला बूढ़े! बता कहां है तेरा तिलिस्मघाती?
तुझे मेरी जान मिल सकती है लेकिन तिलिस्मघाती कभी नहीं मिलेगा!
तूने अपनी मुट्ठी में क्या पकड़ा हुआ है?
फौलादी पकड़ वाले वेदाचार्य तक को उस दबाव ने मुट्ठी खोलने पर बाध्य कर दिया-
आहा! यही तो है तिलिस्मघाती! तू इसको पहले ही लिस-लिस घूम रहा था! शायद तू खुद तिलिस्म घूमकर आना चाहता होगा!
अब तू जहां जाएगा वहां से घूमकर वापस नहीं आ पाएगा कीड़े!
क्योंकि नर्क से लौटकर आज तक कोई भी वापस नहीं आया है!
धड़
कक
नागराज!
नागराज!
तू मारा गया सूचक!

नागराज आ गया है नागबाला! चलो, चुपके से उसके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं!
न न, नागू! अभी तो वह वैसे ही काफी गुस्से में है! मौके का इंतजार करो!
नागराज, वेदाचार्य को घायल अवस्था में देखकर अपना आपा खो बैठा था-
तुझसे सवाल बाद में पूछूंगा!
अपना काम तो मैं करके ही जाऊंगा नागराज! तू मुझे रोक नहीं सकता!
पहले तो तुझे इतना पीटूंगा कि तू जीभ के अलावा और कोई अंग हिलाने के काबिल ही न रहे!
ओऽऽऽह! इसका बवंडर रूपी पैर मुझे अपने घेरे में ले रहा है!
ये मामूली नहीं, तिलिस्मी बवंडर है नागराज!

इसके अंदर कई ऐसे हथियार छुपे हुए हैं जो तेरी बोटी-बोटी कर देंगे! और इसके अंदर से निकल पाना असंभव है!
आऽऽह!
ये तेज धार वाले हथियार मेरे शरीर पर जगह-जगह घाव लगा रहे हैं! और तीव्र गति से घूमने के कारण मैं इच्छाधारी कणों में बदलने के लिए दिमाग को केन्द्रित नहीं कर पा रहा हूं!
नागराज की मदद करो नागू!
सूचक ने वेदाचार्य के हाथ से कुछ उठाया है! मुझे इसको रोकना होगा! लेकिन कैसे? मैं तो तिलिस्मी बवंडर तक को रोक नहीं पा रहा हूं! इसको सिर्फ सूचक ही रोक सकता है!
नहीं, नागबाला! नागराज को यह पसन्द नहीं है! जरूरत पड़ेगी तो उसके शरीर में शीतनाग और सौडांगी जैसे सर्प मौजूद हैं!

और वही रोकेगा इसको !
नागरस्सी ने लपककर-
और सूचक भी नागराज के साथ-साथ अपने ही बवंडर में घूमने लगा-
मेरे हथियार मेरा ही शरीर काट रहे हैं ! मुझे इस तिलिस्मी बवंडर को रोकना होगा !
सूचक के हाथ पर शिकंजा कस लिया-
बवंडर के रुकते ही नागराज, सूचक पर हावी हो गया-
आऽऽऽह !

जो मैं चाहता था वह मुझे मिल गया है नागराज! अब मैं तुझसे लड़ने में अपना समय व्यर्थ नहीं करूंगा!
इसे रोको नागराज! जाने मत दो इसको!
ये कहीं नहीं जा सकता!
आऽऽऽह! छोड़ मेरा हाथ नागराज! छोड़ दे!
इस पकड़ से तू छूट नहीं सकता! मैं तुझको इस तिलिस्मीद्वार के पार खींचकर ही रहूंगा!
ऐसा नहीं होगा! तालिस्मान के आदेश का पालन होकर ही रहेगा नागराज!
आऽऽऽऊऽऽऽ
खटचच
ओह! इसने... इसने अपना हाथ ही काट डाला!

धम
मम
म
ये द्वार मुझे घुसने से रोक रहा है!
अरे! सूचक द्वार में गायब हो रहा है! मैं भी इसके पीछे जाऊंगा...
...आऽऽऽह!
ओफ़! भाग गया सूचक! मैं उसको रोकने में असफल रहा!
यह तो अनर्थ हो गया नागराज! घोर अनर्थ! ओफ़! मैंने तिलिस्मघाती को गुप्त द्वार से निकला ही क्यों? सब मेरी गलती है!
तिलिस्मघाती! गुप्त द्वार? आप क्या कह रहे हैं मेरी तो कुछ समझ में नहीं आ रहा है!
दादाजी! आप ठीक तो हैं न?
हां, मैं ठीक हूं भारती! लेकिन अब इस राज को राज रखने का कोई फायदा नहीं है। मुझे सच्चाई बतानी ही पड़ेगी! वरना यह दुनिया एक श्मशान बन जाएगी!
ऐसी कौन सी सच्चाई है जो मुझे भी नहीं पता है दादाजी?
सच्चाई है...
...तुम्हारा भाई!
तुम्हारा जुड़वां भाई अग्रज!
म... मेरा जुड़वां भाई भी है?

है नहीं, था!
'था' यानी... अब वह इस दुनिया में नहीं है?
आजा, नागवाला! यही मौका है! नागराज बातों में मशगूल है!
चलो!
सिर्फ उसका शरीर है! इस सारी मुसीबत की जड़!
जरा विस्तार से बताइए दादाजी, तो शायद मैं भी कुछ समझ सकूं!
नागवाला तो नागराज के शरीर में प्रवेश कर गई, लेकिन मैं क्यों नहीं घुस पा रहा हूं?
ओऽऽऽह! मणि! मणि सहित मैं नागराज के शरीर में प्रवेश नहीं कर सकता!
अब मुझे मणि को छुपाकर फिर वापस आना होगा!
नागराज, वेदाचार्य की बातें सुनने में तल्लीन था-
पच्चीस साल पुरानी बात है नागराज! तक्षकराज यानी तुम्हारे पिता का राज्य छिन्न-भिन्न हो चुका था! नागपाशा कहीं गायब हो चुका था! और मैं भी नगर से दूर एक वीरान स्थान पर अपने पुत्र शिलादित्य के साथ दिन काट रहा था!...

"वहीं पर एक दिन मुझसे एक व्यक्ति मिलने आया-"
तंत्रता! अब तू यहां क्या करने आया है? नागपाश को तंत्र विद्या सिखाकर और तक्षक-नगर को तबाह करके क्या तेरा दिल अभी नहीं भरा, जो यहां पर भी अपनी दुष्टता फैलाने चला आया?
बीती बातें भूल जाओ वेदाचार्य! जमाना बदल गया है! अब तो विज्ञान का युग है! तंत्र और तिलिस्म को भला कौन पूछता है!
मैं तो खुद अपने किए पर पछता रहा हूं कि नागपाश को मैंने तंत्र क्यों सिखाया! उस शक्ति के बल पर तक्षक नगर को उजाड़ दिया उसने! बड़ी मुश्किल से तुम्हारा पता लगाकर आया हूं ताकि तक्षक राज से न सही, तुमसे ही माफी मांग सकूं!
तुम्हारा कार्य माफ करने योग्य नहीं है तंत्रता! फिर भी अगर तुम सच्चा पश्चाताप कर रहे हो तो ईश्वर तुमको स्वयं माफ कर देगा!
ऐसे नहीं मित्र! ईश्वर पर बात मत टालो! मैं अपनी पुत्री चंद्रकला का तो तुम्हारी क्षत्रछाया में देना चाहता हूं! उसको अपनी बहू बना लो! शिलादित्य से विवाह कर दो उसका!
ओह! मैं इसकी चाल समझ रहा हूं! यह वृद्ध हो रहा है! इसकी तंत्र शक्ति क्षीण पड़ रही है! इसीलिए यह शिलादित्य को दामाद बनाकर उस तिलिस्मी क्षमता का प्रयोग करना चाहता है जो मैंने शिलादित्य को सिखाई है! मैं शिलादित्य को इसके जाल में फंसने नहीं दूंगा!
किस सोच में पड़ गए मित्र! मेरी पुत्री अत्यन्त सुन्दर और गृहकार्यों में निपुण है! उससे अच्छी कन्या तुमको भला कहां मिलेगी!

मैं अपने पुत्र का विवाह किसी कुरूप और अपंग लड़की के साथ कर दूंगा, लेकिन तुम्हारी पुत्री को अपनी बहू कभी नहीं बनाऊंगा!
तुम मेरा और मेरी पुत्री का अपमान कर रहे हो वेदाचार्य!
अपनी पुत्री का अपमान तो तुम खुद कर रहे हो! उसको अपनी घिनौनी योजनाओं का मोहरा बना रहे हो!
मैं इस अपमान का बदला लूंगा वेदाचार्य! मेरी बेटी तुम्हारे घर की ही बहू बनेगी। जरूर बनेगी!
ऐसा कभी नहीं होगा!
और अधिकतर जवान संतानों की तरह उसने भी अपने पिता के इस कार्य को गलत समझा!
लेकिन होनी पर किसका वश चल पाया है! शिलादित्य हम दोनों की बातें सुन रहा था।
पिताजी मेरा विवाह किसी सुन्दर कन्या के बजाय कुरूप और अपंग से करना चाहते हैं! शायद वे मुझे अपनी इच्छा से चलाना चाहते हैं!
तंत्रता वह इलाका छोड़कर नहीं गया! उसे तो बस मौके की तलाश थी!

Amaan
और वह मौका उसे मिल गया! चंद्रकलंका सचमुच अत्यन्त सुन्दर थी! एक दिन जानबूझकर उसी रास्ते पर आ खड़ी हुई, जिधर से शिलादित्य गुजरता था!
शिलादित्य एक नजर में ही उस पर मोहित हो गया!
तुम कौन हो सुन्दरी? और इस वीराने में क्या कर रही हो?
मैं पास में ही रहती हूं! मैं चंद्रकलंका हूं। तांत्रिक तंत्रता की पुत्री!
यह जानने के बावजूद भी कि वह तंत्रता की पुत्री है, शिलादित्य ने उससे चोरी छिपे मिलना जारी रखा! चंद्रकलंका के रूप ने उसको अंधा कर दिया था!
मुझे तो इस बात का आभास तब हुआ, जब एक दिन तंत्रता उन दोनों के साथ मेरे सामने आ खड़ा हुआ!
शिलादित्य और चंद्रकलंका दूल्हा एवं दुल्हन के वेष में थे!
नवविवाहित जोड़े को आशीर्वाद दो वेदाचार्य! ये तुम्हारे बेटा-बहू हैं!
होश में आओ पुत्र! तंत्रता और उसकी पुत्री तुमको नहीं, तुम्हारे तिलिस्मी ज्ञान को चाहते हैं। तोड़ दो यह विवाह!
नहीं, पिताजी! आपको भ्रम हो रहा है!
चंद्रकलंका तो मुझसे बेहद प्यार करती है!

जो होना था सो हो चुका है वेदाचार्य! अब गुस्सा थूक दो और बहू का स्वागत करो!
नहीं! चंद्रकलंका को मैं बहू के रूप में कभी स्वीकार नहीं करूंगा। शिलादित्य इस घर में तभी आ सकता है, जब वह अकेला आएगा!
मैंने शिलादित्य को यह सोचकर घर से निकाला था ताकि वह मेरी बात को गंभीरता से ले! लेकिन असर उल्टा ही हुआ!
शिलादित्य, तंत्रता के घर में रहने चला गया! लेकिन सच्चाई को सामने आते देर नहीं लगी। जल्दी ही घर में झगड़े होने लगे!
चंद्रकलंका और तंत्रता शिलादित्य पर तिलिस्मी राज जानने के लिए दबाव डालने लगे!
शिलादित्य ने उनको कुछ नहीं बताया! लेकिन तंत्रता के घर में रहता रहा! इस आस में कि शायद एक दिन चंद्रकलंका सुधर जाए! परंतु वह दिन आने से पहले ही चंद्रकलंका ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया!
एक पुत्र और एक पुत्री!
पुत्र एक पल पहले पैदा हुआ था इसलिए उसका नाम अग्रज रखा गया। पुत्री का नामकरण होने से पहले ही शिलादित्य के सब्र का बांध टूट गया!
तिलिस्मी राज न बताने की स्थिति में चंद्रकलंका उसको बच्चों सहित छोड़ कर जाने की धमकी देने लगी!
और फिर बच्चों के जन्म के एक सप्ताह बाद...
...एक रात को!
खट खट
कौन है?

पिताजी!
शिलादित्य! तुम घायल कैसे हो गए पुत्र? और ये बच्चा?
मेरी पुत्री है पिताजी! सिर्फ इसी को ला पाया हूं अभी! तंत्रता के घर का माहौल बच्चों के लिए उचित नहीं है!
आराम से बैठो, और मुझे सारी बातें बताओ!
वक्त नहीं है पिताजी! मुझे अपने पुत्र को लेने वापस तंत्रता के पास जाना है!
वह बहुत खतरनाक है शिलादित्य! मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं!
नहीं पिताजी! आप इस बच्ची की रखवाली कीजिए! अब ये आपकी जिम्मेदारी है!...
...मैं अभी वापस आता हूं!
लेकिन शिलादित्य नहीं रुका! बच्ची को साथ लेकर या छोड़कर मैं उसके पीछे नहीं जा सकता था! सिर्फ उसके वापस आने का इंतजार कर सकता था!
लेकिन दो दिन बीत गए! शिलादित्य वापस नहीं आया! तो मैं उसकी खोज-खबर लेने के लिए तंत्रता के घर जा पहुंचा! बच्ची को मैं एक तिलिस्म में सुरक्षित रखके गया था!
तंत्रता से मुझे पता चला कि शिलादित्य वहां आया जरूर था लेकिन पुत्र अग्रज को ले जाने में असफल होकर न जाने कहां चला गया था!
रुको शिलादित्य! बात तो सुनो!
वह मुझसे शर्मिन्दा था कि उसने समय रहते मेरी बात क्यों नहीं मानी!
यानी मेरे पिता अभी भी जीवित हैं!
हां! मेरा ज्योतिष ज्ञान तो यही कहता है कि शिलादित्य अभी जीवित है!

"हां, तो मैं कह रहा था कि मैं शिलादित्य की तलाश में तंत्रता के घर जा पहुंचा था"
अग्रज की तरफ कमीनजर भी मत उठाना वेदाचार्य। बच्चों पर पहला हक उसकी मां का होता है। और अब तो इनका बाप भी आ गया है!
अगर मैं चाहूं तो तुम्हारी पोती को भी तुमसे छीन सकता हूं। लेकिन लड़की को पालने-पोसने में न तो मुझे कोई दिलचस्पी है और न ही चंद्रकला को!
इससे पहले कि मैं तुमसे बच्ची को भी छीन लूं, भाग जाओ यहां से वेदाचार्य!
कानून के अनुसार तंत्रता जो कह रहा था वह कर भी सकता था।
लेकिन शिलादित्य बच्ची की जिम्मेदारी मुझे सौंप-कर गया था। मुझे कम से एक संतान को तो तंत्रता से बचाना ही था।
इसीलिए मैं पोते का मोह छोड़कर वहां से दूर, शहर में आकर बस गया। जीवन यापन के लिए मेरे पास पर्याप्त धन था।...
...पांच साल की होते ही मैंने बच्ची यानी भारती को एक बोर्डिंग स्कूल में भेज दिया।
शिलादित्य का कोई पता नहीं चला। उसकी तलाश में मैं जगह-जगह भटका। लेकिन हर बार निराशा ही हाथ लगी। उसी गम में रो-रोकर मेरी आंखें चली गईं।
दिन गुजरते गए। भारती और अग्रज बड़े होते गए। अग्रज का हाल चाल मुझे उस इलाके में रहने वाले दूसरे परिचितों से मिलता रहा।
पता चला कि तंत्रता उसको तंत्र विद्या सिखा रहा था। वह अपना सारा ज्ञान अग्रज के दिमाग में भर रहा था। उसे दूसरा तंत्रता बना रहा था।

"मैं समझता था कि तंत्रता तिलिस्मी राज न पाने का गुस्सा अग्रज को तांत्रिक बनाकर निकाल रहा था! लेकिन यह मेरी भूल थी। तंत्रता का मकसद तो कुछ और ही था-"
"उन्नीस साल बाद की वह रात एक तूफानी रात थी, जिस रात मेरे दरवाजे पर चंद्रकलंका मुझे ढूंढती हुई आ पहुंची थी-"
चंद्रकलंका तुम! क्या हुआ? किसने की तुम्हारी यह हालत?
उसी... उसी दुष्ट ने ससुर जी! मेरे... मेरे अपने बाप तंत्रता ने!
वह अग्रज... के शरीर को अपना शरीर बनाना चाहता है! अग्रज की आत्मा को निकालकर उसमें प्रवेश करना चाहता है!
उसे... उसे बचा लीजिए! बचा लीजिए मेरे लाल को उस दुष्ट से!
कब? कब करेगा वह पापी ये तांत्रिक क्रिया?
अ... अमावस की रात को! ... हिक!
"चंद्रकलंका ने मेरी बाहों में ही दम तोड़ दिया-"
"अमावस की रात, अगली ही रात थी। समय बहुत कम था! चंद्रकलंका के क्रियाकर्म के पश्चात मैं तुरन्त तंत्रता के घर की तरफ रवाना हो गया-"

"अग्रज के मरने की चिन्ता मुझे नहीं थी, क्योंकि उसकी जन्मपत्री से मैं ये जान चुका था कि उसकी मृत्यु चौबीस वर्ष में होनी है, अठारह वर्ष में नहीं-"
लेकिन उसको कोई और नुकसान पहुंचने की चिन्ता मुझे खाए जा रही थी-"
नहीं! ये नहीं हो सकता! अग्रज मर नहीं सकता!
कड़क
"तंत्रा के घर तक मैं अमावस की रात को पहुंच चुका था-"
"लेकिन फिर भी मुझे देर हो चुकी थी-"
वेदाचार्य! तू कहां से आ गया? पर तू जरा सी देर से आया है। तेरा पोता मरा नहीं है। क्योंकि अभी इसका मृत्यु योग नहीं था! लेकिन मैंने इसकी आत्मा और इसके शरीर को अलग कर दिया है!
तांत्रिक क्रियाएं पूरी हो चुकी हैं।
अब अग्रज की आत्मा इस शरीर में कभी नहीं घुस सकती!

अगर इस शरीर में अग्रज की आत्मा नहीं जा सकती तो तेरी आत्मा भी इसमें नहीं जाएगी तंत्रता!
अंधा हो गया, लेकिन फिर भी तेरे तेवर नहीं बदले!
अभी मैं तेरी आत्मा को भी तेरे शरीर से बाहर निकाल देता हूं!
भीषण युद्ध था वह! तंत्रता की तांत्रिक शक्तियां अमावस के कारण अपनी चरम पर थी! और अग्रज के कारण उबले क्रोध ने मेरी तिलिस्मी शक्तियों में भी पैनी धार पैदा कर दी थी!
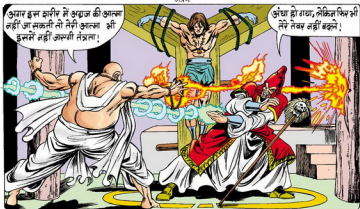
लड़ते-लड़ते सुबह और फिर रात हो गई! आखिरकार तंत्रता को अपनी पराजय स्वीकार करनी ही पड़ी! लेकिन जाते-जाते वह मुझे चेतावनी भी देता गया!
मैंने आधा काम कर लिया है वेदाचार्य! अग्रज के शरीर को उसकी आत्मा से अलग करके। अब मुझे इस शरीर में घुसकर फिर से युवावस्था प्राप्त करनी है! इस शरीर को न तो तू नष्ट कर सकता है और न ही ज्यादा दिनों तक तंत्रता से छिपाकर रख सकता है!
अरे, जा जा! बहुत देखे हैं मैंने तेरे जैसे तांत्रिक तंत्रता! इस शरीर को मैं एक ऐसे तिलिस्म में रखूंगा, जहां पर तेरा साया तक न फटक पाए। वेदाचार्य का तिलिस्म अगर कोई तोड़ सकता है तो शायद सिर्फ एक प्राणी! तिलिस्मराज तालिस्मान! और कोई नहीं!
"मैंने एक जटिल तिलिस्म का निर्माण करके अग्रज के आत्माहीन शरीर को उसमें रख दिया! और फिर मैं न जाने कहां-कहां भटका। किसी ऐसे शख्स की तलाश में जो अग्रज के शरीर में उसकी आत्मा को वापस प्रवेश करा सके। लेकिन ऐसा कोई नहीं मिला! अग्रज की आत्मा मुझसे मुलाकात करने आती रहती थी और इसी दौरान उसको अपनी बहन भारती के बारे में पता चला-"
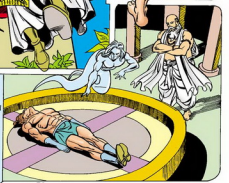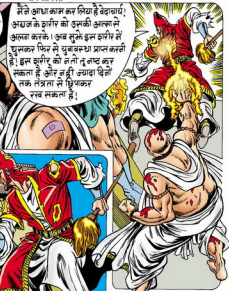
चंद्रकलंका और तंत्रता ने अग्रज से यह बात हमेशा छिपाई थी कि उसकी कोई बहन भी है! इसलिए बहन के बारे में जानकर वह व्याकुल हो उठा! लेकिन मैंने भारती को तंत्रता के घर के माहौल से दूर रखने की ठान ली थी! इसीलिए मैंने भारती को न तो कभी उसकी मां के बारे में बताया था और न ही भाई के बारे में! मैं यह भी नहीं चाहता था कि भारती अपने नाना के हाथों हुए मां और भाई के दुखद अंत के बारे में जानें इसीलिए मैंने अग्रज की आत्मा को भी हमेशा भारती से दूर रखा!
तंत्रता ने एक-दो बार वह तिलिस्म तोड़ने की चेष्टा की! लेकिन असफल रहा! और अब वह तालिस्मान को लेकर आया है!
क्योंकि अब वह भी जान गया है कि अग्रज की प्राकृतिक मृत्यु का समय आ गया है। उसके बाद तांत्रिक शक्ति से सुरक्षित रखा गया शरीर गलना शुरू हो जाएगा! मैंने भी अपने तिलिस्म की तोड़ तिलिस्मघाती को इसलिए निकाला था ताकि मैं अग्रज के शव को तिलिस्म से बाहर लाकर उसका उचित क्रिया-कर्म कर सकूं, और उसकी भटकती आत्मा को मुक्ति दे सकूं!
लेकिन संयोगवश इसी समय तालिस्मान का भी हमला हो गया, और तिलिस्मघाती जाता रहा!
अब तंत्रता ने अगर अग्रज की मृत्यु से पहले उसके शरीर में प्रवेश पा लिया तो वह कहर मचा देगा! क्योंकि अभी इस ब्रह्माण्ड की सारी अतृप्त आत्माओं को अग्रज ने अपने वश में करके शांत रखा हुआ है। अग्रज के शरीर के साथ-साथ तंत्रता उन पर भी कब्जा पा लेगा! और तंत्र शक्ति और आत्माओं के बल पर पूरी सृष्टि का अहित कर डालेगा!
उसको रोकने का कोई उपाय तो होगा दादाजी!
सिर्फ दो उपाय है! एक तो अग्रज की आत्मा को तंत्रता से पहले ही उसके शरीर में प्रवेश करा दिया जाए!
और दूसरा यह कि तंत्रता के हाथों अग्रज का शरीर पड़ने से पहले हम उसको पा लें!
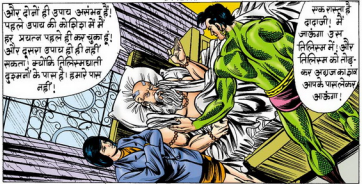
और दोनों ही उपाय असंभव हैं! पहले उपाय की कोशिश में मैं हर प्रयत्न पहले ही कर चुका हूं! और दूसरा उपाय हो ही नहीं सकता! क्योंकि तिलिस्मघाती दुश्मनों के पास है। हमारे पास नहीं!

एक रास्ता है दादाजी! मैं जाऊंगा उस तिलिस्म में! और तिलिस्म को तोड़-कर अग्रज का शव आपके पास लेकर आऊंगा!

ये क्या कह रहे हो नागराज! उस तिलिस्म को तो शायद मैं खुद भी अब तोड़ नहीं सकता! वैसे भी जब तक तुम तिलिस्म का पहला चरण पार कर पाओगे तब तक तंत्रता तिलिस्मघाती के जरिए अग्रज के शरीर तक पहुंच चुका होगा!

यानी मुझे तिलिस्म को तोड़ते हुए उनसे पहले अग्रज तक पहुंचना होगा! मैं यह काम कर लूंगा दादाजी! आप तो बस मुझे तिलिस्म के बारे में बताइए!

फेसलेस को नागराज के साथ भेज दीजिए दादाजी!

नहीं, भारती! खतरा गंभीर है। मुझे यहां की सुरक्षा के लिए भी कोई चाहिए! क्योंकि फिलहाल मैं यहां की सुरक्षा नहीं कर सकता!

तिलिस्म को विस्तार पूर्वक समझा पाना असंभव है नागराज! क्योंकि न तो मुझे सारी बातें याद हैं और न ही उनको बताने का समय है। मेरी हालत भी ऐसी नहीं है कि मैं तुम्हारे साथ जा सकूं!

ध्यान से सुनो नागराज! उस तिलिस्म में घुसने के दो द्वार हैं। जो द्वार तंत्रता जानता है, वहां से अग्रज के शरीर तक का रास्ता लंबा है। दूसरे दरवाजे से जाने वाला रास्ता छोटा है!

लेकिन वह छोटा रास्ता अत्यंत जटिल और खतरनाक तिलिस्मों से भरा हुआ है। तुम मेरा बनाया हुआ एक तिलिस्म तोड़ चुके हो। इसलिए मुझे उम्मीद है कि तुम मेरा यह तिलिस्म भी तोड़ सकोगे।
तिलिस्म के छोटे द्वार की स्थिति मैं तुमको बताता हूं। सुनो!
स्थिति जानने के बाद नागराज एक पल भी वहां नहीं रुका-
पर ध्यान रहे। ये वह तिलिस्म है, जिसको तिलिस्मराज तालिस्मान भी भेद नहीं पाया है। जबकि उसके अंदर किसी भी तिलिस्म का प्रतिरोधी तिलिस्म रचने की क्षमता है। सावधान रहना!
नागू मणि छिपाने में व्यस्त था-
तड़ाक
अरे! फिर वापस आ गई। हर कोने में कोई न कोई तिलिस्म है!
मणि छुपाने की कोई जगह ही नहीं मिल रही है!
अरे! अरे! नागराज तो फिर कहीं जा रहा है। यानी मुझे इसके पीछे जाना होगा। मणि छुपाना कैंसिल। वैसे भी इस घर में मणि छुपाने लायक जगह है भी नहीं!

नागराज ने योजना को थोड़ा सा बदल दिया था-
तिलिस्मघाती इस वक्त तालिस्मान और तंत्रता के पास है! वे भी जरूर तिलिस्म के पास ही होंगे। क्यों न तिलिस्म तोड़ने की कोशिश करने से पहले उनसे तिलिस्मघाती हासिल करने की कोशिश की जाए!
हां! यही करना ठीक होगा!
तंत्रता और तालिस्मान अभी तिलिस्म में प्रवेश नहीं कर सके थे-
तुमको जगाकर मैंने शायद भूल की है तालिस्मान। क्योंकि न तो तुमने वेदाचार्य का तिलिस्म तोड़ने की कोशिश की और न ही तिलिस्म के द्वार पर जमे इस मिट्टी के पहाड़ को हटा पा रहे हो!
लेकिन फिर भी मैं अपनी तिलिस्मी शक्ति को सिर्फ इसलिए बचाकर रखना चाहता हूं, ताकि मैं इस तिलिस्म को हर हाल में पार कर सकूं। फिर भी अगर तुझे सब्र नहीं है तो ले! ये गया मिट्टी का पहाड़!
हूऽऽऽऽ
और सामने आ गया है...
वेदाचार्य के तिलिस्म को मामूली मत समझ तंत्रता! हालांकि अब मेरे पास इस तिलिस्म का तिलिस्मघाती है...

तिलिस्म का प्रवेश द्वार!
अब जा! इसमें प्रवेश कर तालिस्मान! मैं तो तेरे साथ जा नहीं सकता। क्योंकि तिलिस्म-घाती एक ही आदमी लेकर जा सकता है!
और जैसे-जैसे तेरे सामने का तिलिस्म हटेगा वैसे वैसे पीछे का तिलिस्म फिर बनता जाएगा!
फिर पीछे से प्रवेश कर पाना असंभव है। तू जा! मैं यहीं पर तेरा इंतजार करूंगा!
इसके अंदर न तो तू जा पाएगा तंत्रता, और न ही तालिस्मान!...
...क्योंकि तिलिस्मघाती मैं ले जाऊंगा!
सट
घड़ड़
नागराज!
मुझसे गलती हो गई! तुझको तो उस पुरानी फैक्ट्री में ही खत्म कर देना चाहिए था!

लेकिन जो अपनी गलतियों से सीख ले, वही इंसान है! मैं भी तुझे जिन्दा छोड़ने की गलती दुबारा नहीं करूंगा!
आऽऽऽह!
कड़ड़ड़
यही तो तेरी गलती है कि तू अपने आपको इंसान समझ रहा है तंत्रता! ...
...जबकि तू तो शैतान का भी बाप है बुड्ढे!
आऽऽऽह! आऽऽऽह!
विषफुंकार! तालिस्मान रोको इसको! छीनो इससे तिलिस्मघाती!
तालिस्मान के रहते तिलिस्मघाती कहीं नहीं जा सकता! सोच ले, नागराज! जान देगा या तिलिस्मघाती!
ओह! इसकी मुट्ठियां तो विशालकाय घूंसों का रूप ले रही है!

...और अब ये मेरी चटनी बनाने को मशीन की तरह घूंसे बरसा रहा है!
शायद मेरी विष फुंकार कुछ काम कर जाए!
फू
आssss ह!
गुड! मेरी विष फुंकार इसको भी विचलित कर रही है! विष फुंकार को और तीव्र करता हूं!
धममम

लेकिन नागराज को विष फुंकार तीव्र करने का मौका ही नहीं मिला-
उम्मफ! ऊssss
इसने तो विष फुंकार बंद करने के साथ-साथ मुझे भी शिकंजे में कस लिया है। इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करता हूं!
नागराज तो इच्छाधारी कणों में बदलकर आज़ाद हो गया! लेकिन-
अरे! तिलिस्मघाती मेरे साथ इच्छाधारी कणों में नहीं बदल पाया है! मेरे हाथ से छूट-कर नीचे गिर गया है!
जब तक नागराज सामान्य रूप में वापस आकर
तिलिस्मघाती को उठा पाता-
हा हा हा! अब तिलिस्म-घाती मेरे पास है। योजना थोड़ी सी बदलनी पड़ेगी तालिस्मान! तुम नागराज को रोको, और मैं तिलिस्म में घुसता हूं!
नागराज के देखते-देखते ही तंत्रता, तिलिस्म में प्रवेश कर चुका था-
और नागराज के सामने रह गया था, शक्तिशाली तालिस्मान-
तेरी शक्तियां विचित्र हैं नागराज! इसलिए तुझे ऐसे तिलिस्म में बांधना होगा, जो तेरे साथ-साथ तेरी शक्तियों को भी बांध दे!
हवा से ईंटों की बरसात होने लगी-

नागराज बचेगा तो जरूर यह हम सभी जानते हैं, लेकिन कैसे हराएगा वह तालिस्मान को और कैसे रोकेगा तंत्रता को अग्रज का शरीर हासिल करने से? यह तब पता चलेगा जब टूटेगा...

नागराज का कहर